बामा, भामा, कामिनी कहि बोलो, प्रानेस !
प्यारी कहत लजात नहिं, पावस चलत बिदेस।

—बिहारी

आँखिन मूँदिबे के मिस आनि अचानक पीठि उरोज लगावै;
कैहूँ कहूँ मुसकाय चितै, अँगराय अनूपम अंग दिखावै।
नाह छुई छल सों छतियाँ, हँसि भौंह चढाय अनंद बढ़ावै;
जोबन में मदमत्त तिया हित सौं पति को नित चित्त चुरावै।

—चिंतामणि

पलनु पीक, अंजनु अधर, धरे महावरु भाल !
आजु मिले सु भली करी, भले बने हो, लाल !

—बिहारी

खीन, मलिन, बिख-भैया — औगुन तीन !
मोहि कहत बिधु-बदनी पिय मतिहीन।

—रहीम

THE SIXTEEN HEROINES

लेखक

डॉ० राकेशगुप्त, डी० फ़िल्०, डी० लिट्०

रेखांकनकार

डॉ० श्यामबिहारी अग्रवाल, एम० ए०, डी० फ़िल्०

By

Dr. Rakeshgupta, D. Phil., D. Litt.

Sketches Drawn by

Dr. Shyam Bihari Agrawal, M. A., D. Phil

Published by
GRANTHAYAN
Sarvoday Nagar, Sasni Gate,
ALIGARH-202001

First Edition : **1992**

Price :
Rs. Eighty Only

Printed by
Navyug Press
Mahavirganj, Aligarh-202 001.

साठ वर्ष की अटूट मैत्री के उपलक्ष्य में

अभिन्न

श्री हरिस्वरूप पाठक को

सप्रेम समर्पित

Affectionately Dedicated to

Sri Hariswaroop Pathak,

Who has ever been so close to me,

to celebrate sixty years' unbroken friendship

प्राक्कथन

प्रयाग विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग में डी-लिट्० के शोध-छात्र के रूप में मैंने 'नायक-नायिका-भेद' विषय से संबंधित साहित्य का व्यापक और गंभीर अध्ययन किया था। यद्यपि मुझे डी-लिट्० की उपाधि तो १९५२ ई० में प्राप्त हो गई थी, तथापि 'स्टडीज़ इन नायक-नायिका-भेद' नामक प्रबंध का प्रकाशन १९६७ ई० में ही संभव हो सका। नायिका के विभिन्न भेद-प्रभेदों के उदाहरण के रूप में मुझे सहस्रों पद्यों को पढ़ने का अवसर मिला। कदाचित् उसी समय मेरे अवचेतन में कुछ छंदों की रचना करने की इच्छा का वपन हो गया था। सम्प्रति अनंत अवकाश के क्षणो मे वह सुप्त इच्छा स्वयमेव जाग्रत् होकर मूर्त रूप ग्रहण करने लगी; और इस प्रकार शयन-कक्ष में विश्राम करते हुए इन तुकान्त पंक्तियों का अनायास ही सर्जन हो गया।

भरत ने अपने 'नाट्य-शास्त्र' में, जो इस विषय के उपलब्ध ग्रन्थो मे सर्वाधिक प्राचीन है, अष्टविध नायिकाओं का कथन किया है। ये भेद नायक के संबंध से नायिका की विभिन्न अवस्थाओं अथवा परिस्थितियों के द्योतक है। मैंने अपने शोध-प्रबंध में इस वर्गीकरण का विस्तार करके नायिका की सोलह स्थितियों की परिकल्पना की थी। इन सोलह भेदों के उदाहरण-स्वरूप मैंने सोलह पद्यों की रचना की है, तथा मेरे प्रिय मित्र डॉ० श्यामबिहारी अग्रवाल ने, जो प्रयाग विश्वविद्यालय के ललित कला विभाग में वरिष्ठ प्राध्यापक हैं, इन नायिकाओं को कलात्मक रेखाचित्रों के माध्यम से अंकित किया है। डा० अग्रवाल के इस अमूल्य अवदान के लिए मैं उनका परम आभारी हूँ। विषय को यत्किंचित् संपूर्णता का आभास देने के उद्देश्य से कतिपय अन्य वर्गीकरणों को तथा उनके अन्तर्गत आनेवाले भेदों को भी यहाँ दे दिया गया है। मेरे आदरणीय सहयोगी प्रोफ़ेसर ओम्प्रकाश गोविल ने हिन्दी पद्यों के अंगरेजी अनुवाद को देखने का कष्ट उठाया है, जिसके लिए मैं उनके प्रति अपनी हार्दिक कृतज्ञता ज्ञापित करता हूँ।

यदि यह स्वत.सर्जित लघु रचना कला और काव्य के प्रेमियों का सामान्यतः तथा काव्यशास्त्र और नाट्यकला में रुचि रखनेवालों का विशेष रूप से थोड़ा-सा भी रंजन कर सकी, तो मैं स्वयं को प्रभूत पुरस्कृत समझूंगा।

राकेशगुप्त

Foreword

As a D.Litt. scholar is the Hindi Dept. of the University of Allahabad I had made an extensive and thorough study of the subject of *Nāyaka-Nāyikā-bheda* I got the degree in 1952, but my work was published under the title *Studies in Nāyaka-Nāyikā-bheda* in 1967. As I had then read thousands of stanzas illustrating different types of the Heroine, a desire to compose a few illustrations myself was perhaps nebulous in my subconscious at that very time. Now that I have a lot of leisure, the latent desire automatically gained momentum and manifested itself, and so these rhymes were composed by me quite effortlessly while taking rest

Bharata, the author of *Nātyaśāstra*, the oldest available, treatise on dramaturgy, had mentioned eight types of the Heroine, rather eight states (अवस्था) or situations wherein a Heroine may be peced in relation to the Hero. I had expanded this classification into a sixteenfold one in my thesis. These sixteen types of the Heroine have been illustrated here by me in verses, as also by my dear friend Dr. Shyam Bihari Agrawal through artistic sketches. I feel highly indebted to Dr. Agrawal, who is a Senior Lecturer in the Fine Arts Dept. of the University of Allahabad, for his invaluable contribution.

A few more classifications and types thereunder have been added here to give the theme a finished look. The English rendering of Hindi verses has been revised by my esteemed colleague Professor O.P. Govil, to whom I am sincerely grateful.

If this spontaneously created small composition generates some interest in lovers of art and poetry in general and in connoisseurs of dramaturgy and poetics in particular, I shall feel amply rewarded.

Rakeshgupta

अनुक्रम

○ ○ ○

CONTENTS

षोडश
नायिका
E SIXTEEN
ROINES

एक

षोडशविध वर्गीकरण

नायिकाभेद-शास्त्र की परंपरा के अनुसार सुन्दर एवं युवा पुरुष के प्रेम-भाव का आलंबन बनने की पात्रता रखने वाली मोहक और यौवन-प्राप्त रमणी ही नायिका कहलाती है।

नायक के संबंध से नायिका की सोलह अवस्थाएँ हो सकती हैं, अथवा परिस्थिति-भेद से नायिका सोलह प्रकार की होती है। इन भेदों को चार वर्गों के अन्तर्गत रखा जा सकता है :

[क] प्रवत्स्यत्वल्लभा, विरहपीडिता (प्रोपितभर्तृका), आगतवल्लभा, संयुक्ता (संयोग-आनंदिता);

[ख] वासकसज्जा, विरहोत्कंठिता, खंडिता, कलहांतरिता;

[ग] अभिसारिका, विप्रलब्धा, अन्यसंभोगदु:खिता;

[घ] विदग्धा, गुप्ता, लक्षिता, मुदिता, अनुशयाना।

प्रथम वर्ग की चारों अवस्थाएँ अनूढा, स्वकीया और परकीया सभी में संभव है। यही स्थिति द्वितीय वर्ग के संबंध में भी है। किन्तु तृतीय एवं चतुर्थ वर्ग से संबंधित स्थितियाँ अनूढा और परकीया में ही सामान्य रूप से उपलब्ध होती हैं। हाँ, अन्यसंभोगदु:खिता की स्थिति स्वकीया में भी संभव है।

स्वाधीनवल्लभा नायिका के लिए खंडिता, कलहांतरिता, विप्रलब्धा तथा अन्यसंभोगदु:खिता की स्थितियों में आने का प्रश्न ही नहीं उठता।

ONE

The Sixteenfold Classification

The Heroine, by convention, is a young and attractive woman, who is, or who can be, the object of love for a handsome youth.

On the basis of the states or situations she may be placed in with relation to the Hero a Heroine can be of sixteen types. These types may be arranged under four groups:

(a) Pravatsyatvallabhā, Virahapīḍitā, Āgatavallabhā, Saṁyuktā;

(b) Vāsakasajjā, Virahotkaṇṭhitā, Khaṇḍitā, Kalahāntaritā;

(c) Abhisārikā, Vipralabdhā, Anyasambhogaduḥkhitā

(d) Vidagdhā, Guptā, Lakṣitā, Muditā, Anuśayānā.

All the four states under group (a) are possible in relation to Anūḍhā, Svakīyā and Parakīyā. The same is true about the four states mentioned under group (b) But the states mentioned under groups (c) and (d) are normally possible in relation to Anūḍhā and Parkīyā only. A Swakīyā may, however, be placed in the situation of Anyasambhogaduḥkhitā. But the Svādhīnavāllabhā can never be placed in the situations of Khaṇḍitā, Kalahāntaritā, Vipralabdhā and Anyasambhogaduḥkhitā.
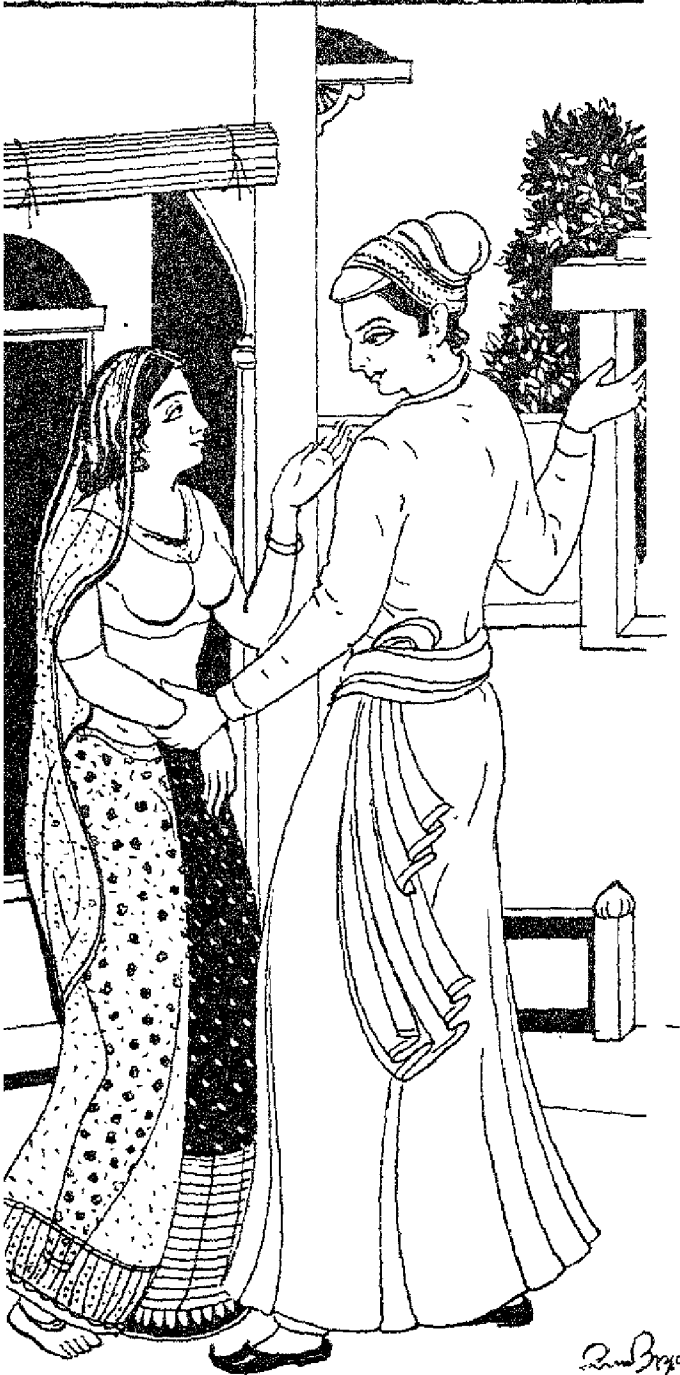
प्रवत्स्यत्वल्लभा

१. प्रवत्स्यत्वल्लभा

प्रिय के आसन्न विदेश-गमन के समाचार से दुःखी नायिका प्रवत्स्यत्वल्लभा कहलाती है।

प्रिय से सुन संवाद गमन का
मुरझी छुई-मुई-सी श्यामा।
"धीरज धरो, प्रिये, लौटूंगा
सत्वर", कह रामा को थामा।
"कहते 'प्रिये' न लज्जा मन में,"
क्षोभयुक्त हो बोली भामा,
"छोड़ विदेश चले मधुऋतु में,
कहो मुझे वन्या या वामा।"

1. THE PRAVATSYATVALLABHĀ

A Heroine is Pravatsyatvallabhā, who feels distressed on hearing that her lover is about to leave for a distant land.

On hearing from her beloved that he is about to leave for a distant land, the young lady languishes like the touch-me-not plant. "Have patience, O darling! I shall be back soon", saying this the Hero holds the charming damsel by his arm. "Are yoy not ashamed to call me 'darling' even when you are parting company with me in the spring season?"—says the agitated and irate lady. "Better address me as a wild (uncultured) or crooked woman

२. बिरहपीडिता (प्रोषितभर्तृका)

पति के विदेश चले जाने की स्थिति में नायिका विरहपीडिता कहलाती है।

बाहर झड़ी लगी सावन की,
इधर नयन दो झर-झर बरसे;
पिया-दरस-रस बिना, सखी री,
फिर भी ये प्यासे रह तरसे।
क्या न गूँजतीं वहाँ दिशाएँ
मेघ-मोर-चातक के स्वर से?
लगता, वह जादू की नगरी,
जहाँ बीर ननदी के अरसे।

2. THE VIRAHAPĪḌITĀ (PROṢITABHARTṚKĀ)

A Heroine is Virahapīḍitā, when her lover is away in a distant land.

It is raining incessantly outside, as is natural in the month of Śrāvaṇa (July-August); and here my eyes are shedding tears ceaselessly. Even then, my dear friend, my eyes are thirsty, pining for the ambrosial glimpse of my beloved. Do the directions there not resound with thunder of clouds, and with the voices of peacocks and chātakas (a bird which is said to subsist on rain-drops). It appears that it is a city of magic, where the brother of my sister-in-law (that is, my husband) is relaxing. (Suggested meaning : It appears that my husband has been seduced there by some charming woman.)

आगतवल्लभा

३. आगतवल्लभा

प्रिय के विदेश से लौटने का सुखद समाचार ज्ञात होने पर नायिका आगतवल्लभा कहलाती है।

अभी–अभी संदेश मिला है,
आने वाले हैं वनमाली;
फूल गई छाती रमणी की,
चमक उठी गालों पर लाली।
"मलिन वेश कर दूर सजा दूँ
तुझे, सखी !" हँस बोली आली।
"ठहर, देख लें वे, वियोग ने
मेरी कैसी गत कर डाली।"

3. THE ĀGATAVALLABHĀ

A Heroine is Āgatavallabhā, when she gets the happy news of her lover's imminent arrival after a sojourn.

The Heroine has just received the message that her beloved is arriving shortly after a sojourn. On hearing the good news the lovely young woman is elated with joy, and her cheeks are flushed. "Let me dress you up after changing your dirty apparel", says her female friend smilingly. "Please wait", comes the reply, "let him also see the plight, whereto I have been drawn by his separation

आगतवल्लभा

३. आगतवल्लभा

प्रिय के विदेश से लौटने का सुखद समाचार ज्ञात होने पर नायिका आगतवल्लभा कहलाती है।

अभी-अभी संदेश मिला है,
आने वाले हैं वनमाली;
फूल गई छाती रमणी की,
चमक उठी गालों पर लाली।
"मलिन वेश कर दूर सजा दूँ
तुझे, सखी !" हँस बोली आली।
"ठहर, देख लें वे, वियोग ने
मेरी कैसी गत कर डाली।"

3. THE ĀGATAVALḶABHĀ

A Heroine is Āgatavallabhā, when she gets the happy news of her lover's imminent arrival after a sojourn.

The Heroine has just received the message that her beloved is arriving shortly after a sojourn. On hearing the good news the lovely young woman is elated with joy, and her cheeks are flushed. "Let me dress you up after changing your dirty apparel", says her female friend smilingly. "Please wait", comes the reply, "let him also see the plight, whereto I have been drawn by his separation

संयुक्ता

४. संयुक्ता (संयोग-आनंदिता)

प्रिय से आह्लादकारक मिलन की स्थिति में नायिका संयुक्ता कहलाती है।

आँख मूँदने के मिस आकर
लिपट गई प्रियतम से बाला;
मादक अँगड़ाई लेकर निज
अनुपम अंग दिखा ही डाला।
भेद भरी सुन बात पिया की
प्यारी ने शरमाकर टाला;
हाव-भाव कर, मुसकाकर फिर
पहना दी बाहों की माला।

4. THE SAMYUKTĀ (SAMYOGA-ĀNANDITĀ)

A Heroine is Saṁyuktā, when she has ecstatic union with her lover.

On the pretext of covering his eyes from behind the young lady clings to her beloved. Then she lasciviously stretches her body, thereby exposing her beautiful limbs. She bashfully evades a secret proposal, whispered into her ear by the lover. Then making amorous gestures she puts the garland of her arms around the neck of her beloved sm lingly

५. वासकसज्जा

सज-सँवरकर पूर्ण आत्मविश्वास के साथ प्रिय के आने की प्रतीक्षा करनेवाली नायिका वासकसज्जा कहलाती है।

कर सोलह शृंगार सुन्दरी
डूबी सुख-स्वप्नों के चय में;
सेज सजा सुरभित सुमनों से
बैठी है एकांत निलय में;
प्रियतम अब आते ही होंगे,
यह प्रत्यय है अटल हृदय में;
सहज आत्मविश्वास प्रिया का
मुखरित है साँसों की लय में।

5. THE VĀSAKASAJJĀ

A Heroine is Vāsakasajjā, when she is dressed up to receive her lover with the confidence that come he must.

The lovely lady, who has adorned herself with the sixteen types of make-up and embellishments, who in an expectant mood is lost in many a pleasant dream, and who has decked her bed with fragrant flowers, is sitting in her solitary abode. She has a firm conviction that her dearest beloved is to arrive very shortly. The rhythm of her breath is a vocal indication of her innate confidence.

६• विरहोत्क

६. विरहोत्कंठिता

निश्चित समय के कुछ देर बाद तक भी प्रिय के न आने के कारण चिंतित और व्याकुल नायिका विरहोत्कंठिता कहलाती है।

पल–पल करके बीत रही है
प्रियतम के आने की बेला;
मचा हुआ उद्विग्न चित्त में
सौ–सौ शंकाओं का खेला;
"कैसे और कहाँ होंगे प्रिय"।
व्याकुल है मन निपट अकेला।
कुम्हलाए प्रसून वेणी के,
भूली भाव, हाव औ' हेला।

6. THE VIRAHOTKAṆṬHITĀ

A Heroine is Virahotkaṇṭhitā, when she is tormented by worry, because her lover has not arrived even a little after the appointed time.

The time fixed with the beloved for his arrival is passing away, moment by moment. A hundred apprehensions are agitating the mind of the anxious Heroine. Her thoughts are dominated by such queries as 'Where and why has he been detained? God forbid, has he met with some mishap?' Alone as she is, she is highly perturbed. The flowers intertwined in her braid have withered and she has forgotten all amorous pranks and gestures
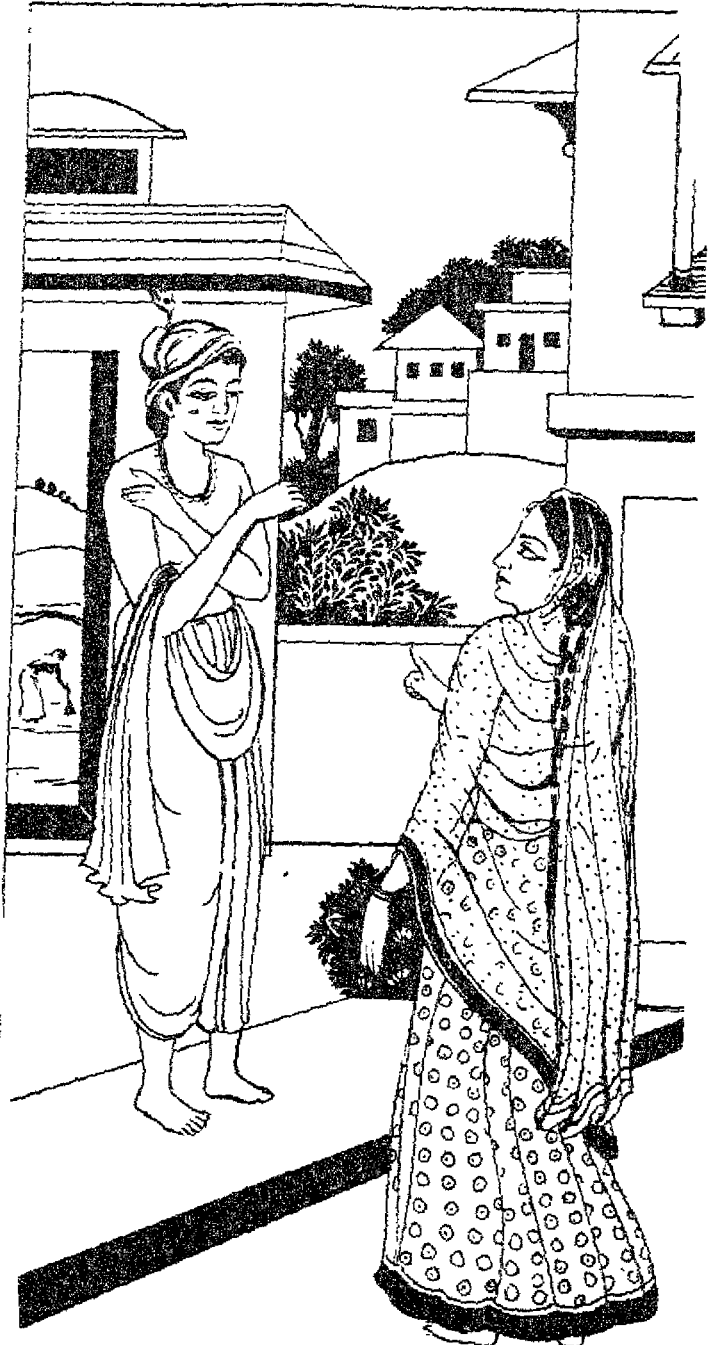
७. खंडिता

७. खंडिता

अन्य प्रेमिका से मिलन के स्पष्ट चिह्न धारण किए हुए जब दोपी
[illegible]क व्यथित एवं क्रुद्ध नायिका के समक्ष उपस्थित होता है, उस समय की
[illegible]ति में नायिका खंडिता कहलाती है। इसी स्थिति में नायक के प्रति
[illegible]ना रोष स्पष्ट रूप से अभिव्यक्त करनेवाली नायिका मानवती हो जाती
मानवती के उदाहरण के लिए छंद संख्या १७ देखिए।

प्रात हुआ, प्रियतम घर आए
लेकर यह अद्भुत छवि कैसी !
अधरों पर काजल है और
कपोलों पर लाली है वैसी;
तिलक अलक्तक का मस्तक पर,
आँखें अलसाई हैं ऐसी—
अफल प्रतीक्षा औं अमर्ष से
हुईं प्रिया की भी अब जैसी।

7. THE KHAṆḌITĀ

A Heroine is Khaṇḍitā, when she is afflicted with agony and anger on account of the evident infidelity of her lover, who, bearing marks of his union with another woman on his person, presents himself befor her. A Khaṇḍitā becomes Mānavatī when she expressly shows her anger to the Hero. The Mānavatī has been exemplified in verse No. 17.

Morning has just dawned, and lo, her darling has also come home with wonderful looks, he has traces of collyrium on his lips, and his cheeks are stained red (with lipstick); his forehead has been smeared with a vertical mark of alaktaka (a red dye meant for application on the feet of women). His eyes are drowsy and flushed as are the eyes of his beloved too, but on account of fruitless expectation and jealous anger.

Note-The Hero has spent the foregoing night with hi[s] second love. He has kissed her eyes, and has been kisse[d] by her on the cheeks; he has put his forehead on her fee[t] to conciliate the irate lady; and consequently he did no[t] have any sleep during the foregoing night. This account for his unusual looks

कलहान्तरिता

८. कलहांतरिता

दोषी नायक को क्रोधवश अपने से दूर करके पश्चात्ताप करनेवाली नायिका कलहांतरिता कहलाती है।

भूल हुई, पर लज्जित थे, सखि,
पश्चात्ताप उन्हें था भारी;
मान अभेद्य किया था मैंने,
विफल हुईं मनुहारें सारी;
चरणों पर गिर कहा उन्होंने,
"अब तो क्षमा करो, हे प्यारी !"
निठुर रही मैं, लौट गए वे,
पछताने की मेरी बारी।

8. THE KALAHĀNTARITĀ

A Heroine is Kalahāntaritā, when she, having repulsed her errant lover out of indignation, suffers remorse.

Although he had erred, O friend, he felt ashamed for what he had done, and he was very repentant too. My pride and anger born out of jealousy were implacable, and so all his earnest entreaties to pacify me proved futile. He even fell down at my feet and said, "Pray, excuse me this time, my dear sweetheart !" But I remained unmoved, and he went back disappointed It is now my turn to be emorseful

९. अभिसारिका

प्रियतम से निश्चित समय और स्थान पर मिलने के लिए जानेवाली प्रेमातुर नायिका अभिसारिका कहलाती है।

दो उन्नत उरोज आतुर थे
आलिंगन में कस जाने को;
फड़क रहे अधरोष्ठ प्रिया के
प्रियतम का चुम्बन पाने को;
चंचल थे पद-चक्र कामिनी—
को सहेट तक पहुँचाने को;
तन से आगे भाग रहा मन
मनमोहन में रम जाने को।

9. THE ABHISARIKA

A Heroine is Abhisārikā, when she, being infatuated with love, goes to meet her lover at an appointed time and place.

The two elevated breasts of the Heroine are eager for the tight embrace of her lover. Her quivering lips are anxious to be kissed by the dearest. The two feet of the passionate lady are swiftly moving like wheels towards the place of her rendezvous Her heart is rushing much ahead of the body to get immersed in one who has already
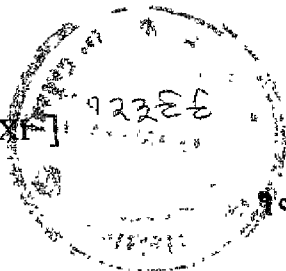
१०. विप्रलब्धा

नायक को निश्चित समय पर संकेत-स्थल पर न पाने से वंचित एवं व्यथित नायिका विप्रलब्धा कहलाती है।

प्रिय से था अनुबंध मिलन का,
खुशी-खुशी थी चली गई मैं;
पर सहेट पर नहीं मिले वे,
मर्माहत थी, भली गई मैं;
चार घड़ी की व्यर्थ प्रतीक्षा,
समय-चक्र में दली गई मैं;
वंचक का विश्वास किया था,
इसीलिए तो छली गई मैं।

10. THE VIPRALABDHĀ

A Heroine is Vipralabdhā, when she is distressed on account of her lover's failure to reach the rendezvous at the appointed hour.

I had an appointment with my beloved, and so I did go to the tryst merrily. But, alas ! I could not find him there. I was deeply hurt. I had better not gone there at all. I waited for him in vain for a little over an hour and a half (ninety-six minutes), and thus I was crushed under the mill-stone of t me I reposed faith in a sw nd er that Is why I was duped
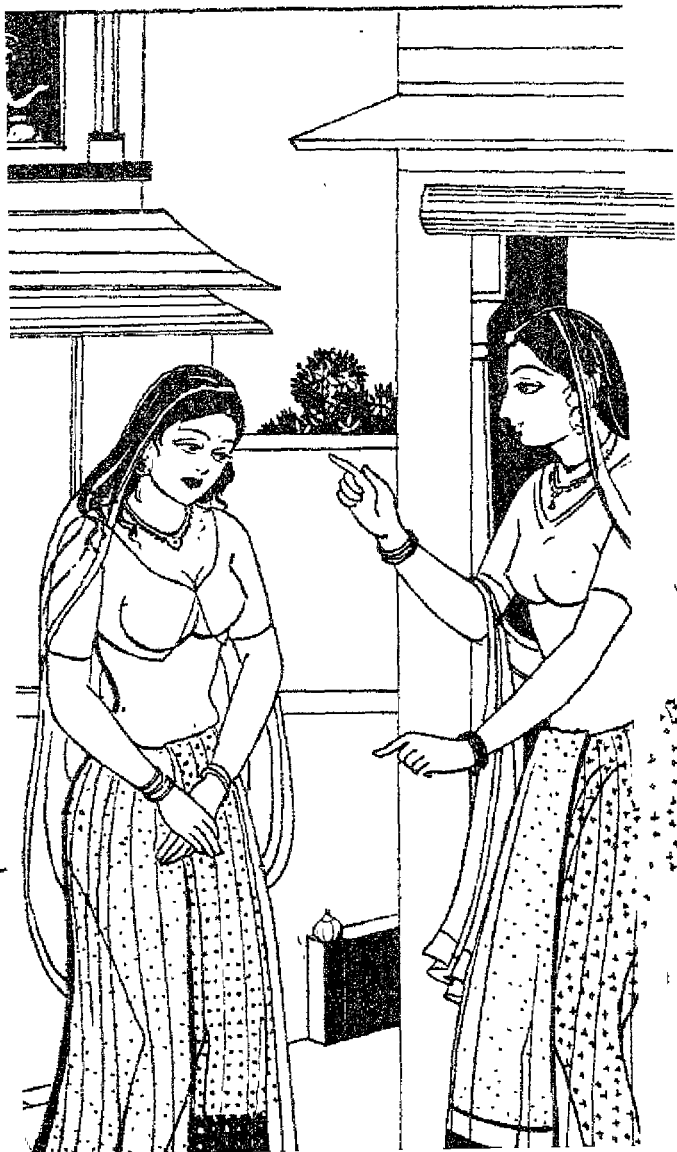
११. अन्यसंभोगदुःखिता

अन्य स्त्री के (जो प्राय: नायिका की दूती होती है) विग्रह पर पने प्रिय के रति-चिह्नों को देखकर चकित एवं दुःखी होने वाली नायिका न्यसंभोगदुःखिता कहलाती है।

मान तुम्हें विश्वस्त, सखी,
भेजा था प्रिय को ले आने को;
नहीं कल्पना थी, पहुँचोगी
उन्हें स्वयं ही अपनाने को।
अस्त-व्यस्त शृंगार तुम्हारा,
वेणी है खुल-खुल जाने को;
ऊर्ध्व श्वास, तन स्वेद-स्नात,
आई हो यह सब दिखलाने को ?

11. THE ANYASAMBHOGADUḤKHITĀ

An Anyasambhogaduḥkhitā feels bewildered and distressed on seeing signs of illicit connection with her lover on the person of another woman.

Reposing implicit trust in you, I sent you to call my beloved. Little did I imagine that you would go there only to woo him for yourself. Your adornment and make-up are all in disarray; your braided hair are dishevelled; you are breathing hard; and, as it appears, you have bathed in your own perspiration Have you O friend come here only to show me al this ?
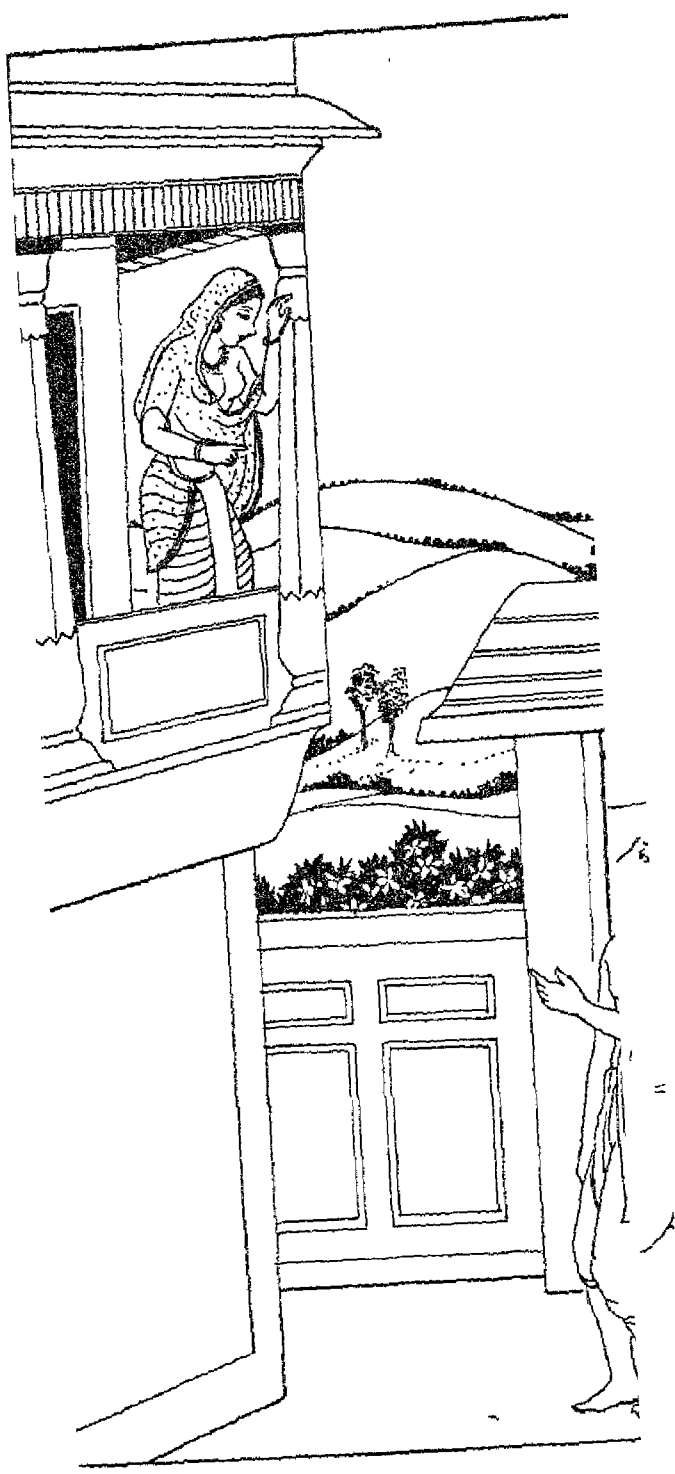
१२. विदग्धा

अपने प्रिय से मिलन अथवा संपर्क की चतुराई से व्यवस्था करनेवाली नायिका विदग्धा कहलाती है। संकेतात्मक शब्दों के प्रयोग से अपना कार्य सिद्ध करनेवाली वचन-विदग्धा तथा क्रिया-कौशल से लक्ष्य प्राप्त करनेवाली क्रिया-विदग्धा होती है। वचन-विदग्धा ही स्वयंदूतिका है। क्रिया-विदग्धा के उदाहरण के लिए छंद संख्या १८ देखिए।

पिता गए परदेस, कह गए,
"नहीं छोड़ना घर सूना, री!"
चली पिरोजन में माँ यह कह,
"रहना सजग, राधिका प्यारी!"
रूठ गई सखियाँ मत्सरवश,
उनको मना-मना मैं हारी।
आज अकेली भीत-विमन मैं,
मत मिलने आना, गिरिधारी!

12. THE VIDAGDHĀ

A Heroine is Vidagdhā, when she cleverly arranges a meeting or a contact with her lover. When she does so with skilful (double-meaning) words, she is Vacana-vidagdhā: when she does it with some tactful action, she is Kriyā-vidagdhā. Vacana-vidgdhā is the same as Svayam-dūtikā or Self messeuger. The second variety has been exemplified in verse No. 18.

My father, while leaving for another town, told my mother not to leave the house desolate. Later, my mother also left the house to attend an ear-piercing ceremony saying to me, "O dear Radha! remain vigilant while I am away." My female frieds are all displeased and angry with me out of envy, because of your preference for me, and I have tried without success to bring them round by persuasion. To-day I am all alone in the house, fear-stricken and depressed. Dear Giridhārī (Kṛṣṇa)! pray, don't come to meet me this evening.

Note—By contra-suggestion the Heroine means to convey. "To-day is the most opportune time for our meeting pray do come

३. गप्ता

१३. गुप्ता

अपने विग्रह पर प्रिय-मिलन के चिह्नों का अन्य कारण बताकर अपने गुप्त प्रेम को छिपाने का प्रयत्न करनेवाली नायिका गुप्ता कहलाती है।

पौ फटने से भी पहले ही
पनघट को मैं चली हठीली;
संध्या की रिमझिम के कारण
राह बनी थी कुछ रपटीली;
सँभल न पाई, छलकी गागर,
हुई शिखा से नख तक गीली।
सखी, साक्षिणी बन सँग चल तू,
न हों सासुजी नीली-पीली।

13. THE GUPTĀ

A Heroine is Guptā, when she tries to conceal her secret love by assigning a different reason for the marks of her union with her lover on her person.

Intransigent as I am, I set off to, fetch water even before dawn. It had drizzled last evening, and so the way had become a little slippery. I could not balance the pitcher on my head, and the water spilled out of the vessel drenching me from top to toe. My dear friend! would you care to accompany me as a witness ?—for otherwise my mother in law may doubt my chastity and show her terrible temper to me

१४ लक्षिता

१४. लक्षिता

जब नायिका का अपने प्रिय से गुप्त मिलन किसी अन्य के द्वारा लक्षित कर लिया जाता है, तब उस स्थिति में उसे लक्षिता कहते हैं।

चली कामिनी पूजा करने
लेकर नीराजन की थाली।
अटक गई संकेत-कुंज में,
जहाँ अवस्थित थे वनमाली।
देख लौटते स्वेद–स्नात हँस
बोली नर्म–सखी मतिवाली—
"धन्य ! आज की जीभर तुमने
इष्टदेव की पूजा, आली !"

14. THE LAKṢITĀ

A Heroine is Lakṣitā, when her secret union with her lover is marked by someone.

The charming and lovely lady ostensibly set forth for the temple, holding a large plate (thāl) in her hand with flowers and a lighted lamp, for offering prayers before the Deity. But in the way she was held up at the bowery tryst, where Kṛṣṇa was already waiting for her. While returning, bathed in perspiration as she was, she was encountered and marked by her intelligent female companion, who smiled at her sarcastically and said, "Dear friend, how blessed you are ! To-day you have worshipped your favourite Deity to your heart s content
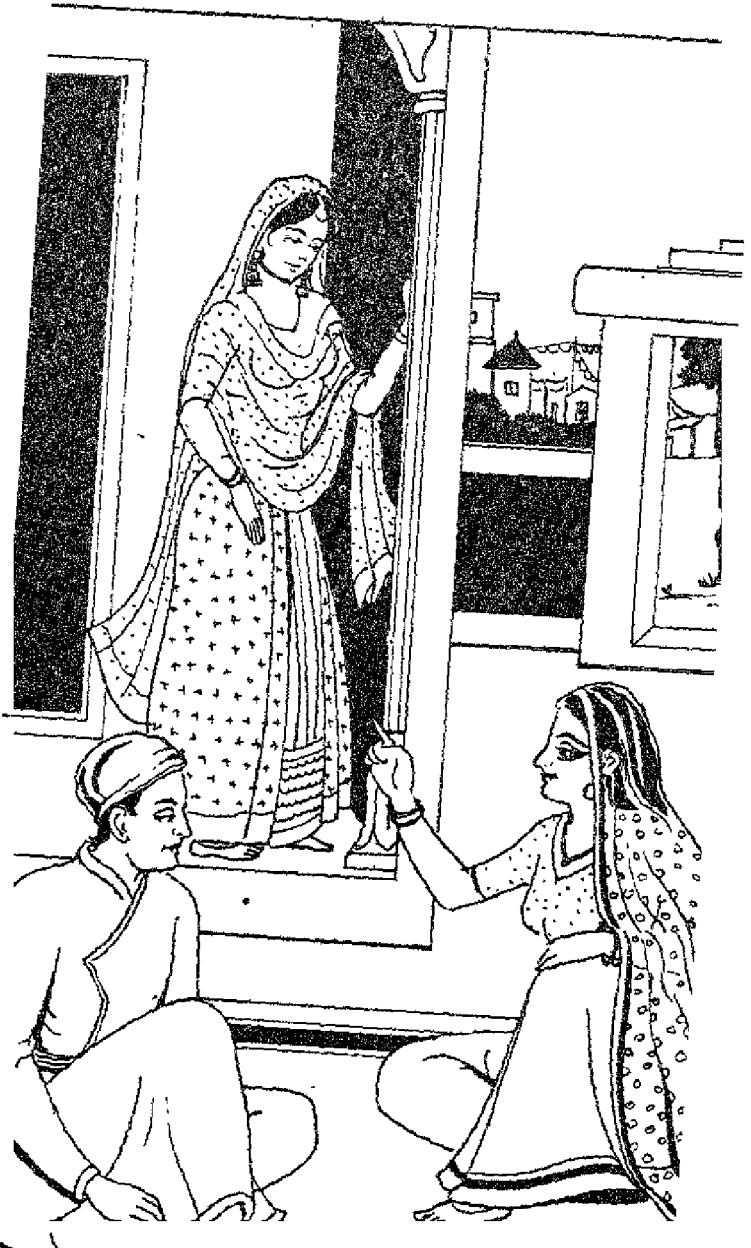
१५. मुदिता

मुदिता दो प्रकार की होती है। (१) प्रिय-मिलन को सुनिश्चित करानेवाली बात सुनकर प्रसन्न होनेवाली नायिका मिलन-निश्चय-मुदिता कहलाती है; (२) प्रिय से अप्रत्याशित मिलन होने की स्थिति में नायिका मिलन-मुदिता कहलाती है। दूसरे भेद के उदाहरणों के लिए छंद संख्या १६ तथा २० देखिए।

दिया निमंत्रण नन्दराय ने,
पूजा का उत्सव था भारी;
जा न सकूँगी, सोच व्यथित थी
कृष्णप्रिया, वृषभानु-दुलारी।
"मुझे काम है", कहा पिता ने,
"मथुरा जाने की तैयारी।"
"तुम्हीं चली जाना", माँ बोली;
पुलक उठी सुन मुग्ध कुमारी।

15. THE MUDITĀ

There are two types of the Muditā: (1) Milana-niscaya-muditā, when she is happy to hear something which insures a meeting with the lover, (2) Milana-muditā, when she unexpectedly meets her lover. The second type has been exemplified in verses numbering 19 & 20.

An invitation has come from Śrī Nandarāya to Śrī Vṛṣabhānu to attend a big festive celebration in connection with some worship. Imagining that she may not be able to go there, and thinking that thereby she would miss an opportunity to meet her love, the beloved of Kṛṣna and the fond 'child of Vṛṣabhānu, that is Rādha, feels depressed. "I have to go to Mathurā on an errand", says her father. The mother, who was disinclined to go out, asks Rādhā, 'pray, you attend the function on our behalf" Hearing this the infatuated maiden is thrilled with joy

अनुशयाना

१६. अनुशयाना

नायिकाभेद के सर्वाधिक लोकप्रिय लेखक भानुदत्त के अनुसार अनुशयाना (प्रिय-मिलन में बाधा आने से उदास और दुःखी) तीन प्रकार की होती है : प्रथम, जो वर्तमान संकेत-स्थल के नष्ट हो जाने के कारण दुःखी है; द्वितीय, जो इस आशंका से दुखी है कि भविष्य में (किसी अन्य व्यक्ति से विवाह होने पर) उसे उपयुक्त संकेत-स्थल सुलभ न हो सकेगा; तृतीय, जो किसी बाधा के कारण निश्चित समय पर संकेत-स्थल पर न पहुँच सकने की विवशता के कारण दुःखी है। द्वितीय भेद तर्कसंगत न होने के कारण अस्वाभाविक प्रतीत होता है। यहाँ प्रथम भेद का उदाहरण दिया जा रहा है, तृतीय भेद के उदाहरण के लिए छंद संख्या २१ देखिए।

प्रबल झकोरों से झंझा के
कितने नीड विनष्ट हुए री !
वृक्ष गिरे, पथ रुद्ध हुए,
किस-किसको क्या-क्या कष्ट हुए, री !
उलट-पुलट हैं वन-वनांत सब,
प्रलय-चिह्न सुस्पष्ट हुए, री !
सुखकर लता-वितान तने जो,
वे भी तो अब भ्रष्ट हुए, री !

16. THE ANUŚAYĀNĀ

According to Bhānudatta, the most popular writer on Nāyikābheda, there are three varieties of the Anuśayānā (or one who is sad and distressed because of some impediments in the way of her union writh her lover) : A Heroine, who has the destruction of her present rendezvous as the cause of her sorrow, belongs to the first type; a Heroine of the second type is sorry, because she apprehends that she may have no proper tryst in future (after her marriage with someone else); the third type of Anuśayānā is distressed because of her helplessness to reach the tryst at the appointed hour. The second type appears to be illogical and hence farfetched. The first is illustrated here: the third has been exemplified in verse No 21

[Continued on page XLV

दो

उपर्युक्त वर्गीकरण के अन्तर्गत कतिपय अतिरिक्त उपभेद

१७. खंडिता के अन्तर्गत मानवती

चाटु वचन सोधे न कर सके
जब भामा के तिरछे तेवर,
माँगी क्षमा प्रिया से प्रिय ने
तब निज मस्तक चरणों पर धर।
वारण किया मानिनी ने
वंचक को मर्म वचन ये कहकर—
"करो नर्म उपचार उसी का,
जिस सुभगा ने लिया हृदय हर।

TWO

A few additional sub-types under the above classification

17. THE MĀNAVATĪ UNDER THE KHAṆḌITĀ

When his coaxing words could not straighten the curve in the eye-brows of the irate lady, the lover sought her forgiveness by placing his head at the feet of his beloved. But the proud lady burning with jealous anger spurned the delinquent lover with these piercing words: "Pray, leave me alone; go and supplicate that lucky woman, who has captivated your heart."

Continued from page XLIII]

O friend ! the strong blasts of the storm have annihilated innumerable nests (the word 'nest' also means 'retreat' or 'a safe, quiet and secluded place'). Almost all paths have been obstructed by trees that have been felled by the gale. It is difficult to recount how many people have suffered and in what manner. The woodland, as also the adjoining region, is all topsyturvy, and signs of complete devastation are in evidence A few cosy arbours raised by nature have a so been pu ed down

१८. विदग्धा के अन्तर्गत क्रियाविदग्धा

लिए साथ सखियों को श्यामा
मंदिर चली देव–दर्शन को;
रखा पृष्ठ में प्रतिमा के जो
सहसा देखा उस दर्पन को;
फिर देखा पीछे से आते
दर्पन में अपने मोहन को;
किया व्याज से देवार्चन के
नमन ससभ्रम जीवन–धन को।

१९. मुदिता के अन्तर्गत मिलन-मुदिता

पूजा करने गोवर्धन की
चली साथ सखियों के राधा;
बिछुड़ गई, सँग–सँग चलने में
हुई भीड़ के कारण बाधा।
"कैसे कहाँ उन्हें मैं ढूँढ़ूँ ?"
हुआ राधिका का मन आधा;
तभी अचानक देख श्याम को
फूल उठी वह प्रेम अगाधा

18. THE KRIĀYVIDAGDHĀ UNDER THE VIDAGDHĀ

The gold-complexioned young lady, accompanied by her friends, set off to the temple to have a view of the Diety. Suddenly she glanced a mirror placed behind the idol, and therein she noticed a reflection of her fascinating Mohana approaching her from behind. While ostensibly making obeisance to the Diety, she deferentially bowed before the lord Kṛṣṇa, her life's cherished treasure.

Note—As Radha is seeing the image of Kṛṣṇa in the mirror, Kṛṣṇa should have noticed her saluting him through the mirror.

19. THE MILANA-MUDITĀ UNDER THE MUDITĀ

Rādhā went to worship the mountain Govardhana with her friends. As there was too much rush, she could not keep pace with her friends, and consequently parted company with them. "How and where shall I search them out ?"—saying so to herself Rādhā felt very much disheartened. Suddenly spotting Kṛṣṇa at that very moment she was elated with joy, for she had unfathomable love for him in her heart

२०. मिलन-मुदिता : एक अतिरिक्त उदाहरण

लौट रही थी यमुना—तट से
　　　　ध्यानमग्न बाला अलबेली;
ठोकर लगी, मोच–सी आई,
　　　　लँगड़ाती तब चली अकेली।
पीछे छोड़ उसे आगे सब
　　　　निकल गईं वे निठुर सहेली;
तभी प्रकट हो दिया सहारा,
　　　　बाहु कृष्ण ने कटि में मेली।

२१. अनुशयाना : भानुरत्त का तृतीय प्रभेद

लता-कुंज से पड़ा कान में
　　　　मृदु वंशी-रव जब श्यामा के,
विकल अधीर हुए तन-मन सब
　　　　पिया-मिलन को तब कामा के;
दारुण दृष्टि ननद की उलझी
　　　　बेड़ी बन पग में भामा के;
पीती रही विवश हो, बाहर
　　　　गिर न सके आँसू क्षामा के।

OOO

20. THE MILANA-MUDITĀ : AN ADDITIONAL EXAMPLE

While returning from the banks of the river Yamunā the young well-groomed lady, being absorbed in the thought of her beloved, stumbled unawares, and so she had a slight sprain in her foot. She then limped all by herself, as her ruthless friends had moved ahead, leaving her behind. Just then Kṛṣṇa appeared on the scene, and naturally supported her by placing his arm around her waist.

21. THE ANUŚAYĀNĀ : BHĀNUDATTA'S THIRD VARIETY

When love-sick Rādhā heard the melodious sound of Kṛṣṇa's flute coming from the bower, her body and mind became restless and impatient for a union with her beloved. But the watchful stern looks of her sister-in-law (husband's sister) fettered the feet of the passionate lady. Being thus helpless, the grief-stricken lean lady had to suppress her tears, because she could not shed them freely, as her love for Kṛṣṇa was secret.

O O O

तीन

नायिका : अनूढा, स्वकीया तथा परकीया

सामाजिक संबंध के आधार पर नायिका तीन प्रकार की होती है : अनूढा, स्वकीया, परकीया।

अनूढा—पुरुष विशेष से प्रेम करनेवाली अविवाहित नारी अनूढा कहलाती है। प्रथम वर्गीकरण के अन्तर्गत विदग्धा और मुदिता के उदाहरण अनूढा से संबंधित हैं।

स्वकीया—अपने पति से एकनिष्ठ प्रेम करनेवाली विवाहित नारी स्वकीया कहलाती है। प्रथम वर्गीकरण के अन्तर्गत विरहपीड़िता (प्रोषितभर्तृका) का उदाहरण स्वकीया से संबंधित है।

परकीया—पति से इतर पुरुष से प्रेम करनेवाली विवाहित नारी परकीया कहलाती है। प्रथम वर्गीकरण के अन्तर्गत गुप्ता का उदाहरण परकीया से संबंधित है।

ООО

THREE

The classification into Anūḍhā, Svakīyā and Parkīyā

There are three types of the Heroine on the basis of her social relationship with the Hero : Anūḍhā, Svakīyā, Parakīyā.

Anūḍhā—Anūhḍā is an unmarried woman in love with a particular man. The examples of Vidagdhā and Muditā under the first classification illustrate Anūḍhā as well.

Svakīyā—A married woman wholly devoted to her husband is called Svakīyā. The example of Virahapīḍitā under the first classification illustrates Svakīyā as well.

Parakīyā—A married woman in love with a person other than her husband is called Parakīyā. The example of Guptā under the first classification illustrates Parakīyā as well.

O O O

चार

नायिका : मुग्धा, मध्या तथा प्रगल्भा

शील-संकोच अथवा लज्जा की मात्रा के आधार पर नायिका तीन प्रकार की हो सकती है : मुग्धा, मध्या, प्रगल्भा।

२२. मुग्धा

नायक के प्रति अपने व्यवहार में अत्यन्त संकोचशील और सलज्ज नवयौवना मुग्धा कहलाती है।

पुलकित थी मन-ही-मन सुनकर
प्रियतम के आने की आहट;
पर कर रही व्यक्त मुख-मुद्रा
अंतर की भारी घबराहट।
हुई किन्तु आश्वस्त, मिली जब
वासित सांसों की गरमाहट;
फिर मोहन के मधु वचनों से
कुछ-कुछ दूर हुई सकुचाहट।

२३. मध्या

बढ़ती हुई घनिष्ठता के साथ संकोच अथवा लज्जा की मात्रा कुछ कम होने की अवस्था में नायिका मध्या कहलाती है।

रंगभवन में पहुँचे मोहन,
उठी ससंभ्रम पुलकित बाला,
मृदु मुसकान, नमित नयनों से
पहना दी स्वागत की माला।
हाथ बढ़े जब आलिंगन को,
पग न प्रिया ने पीछे डाला;
मुख से भले कहा "ना-ना", पर
'ना' का 'हाँ' था अर्थ निराला।

प्रगल्भा

पूर्णयौवना नायिका जब नायक के साथ निस्संकोच होकर व्यवहार करने लगती है, तब वह प्रगल्भा कहलाती है। प्रथम वर्गीकरण के अन्तर्गत संयुक्ता का उदाहरण प्रगल्भा से संबंधित है। OOO

FOUR

The Classification into Mugdhā, Madhyā and Pragalbhā

On the basis of the degree of modesty or bashfulness in her a Heroine can be of three types : Mugdhā, Madhyā, Pragalbhā

22. THE MUGDHĀ

A young woman, who is very modest and bashful in her behaviour with the Hero, is called Mugdhā.

Hearing the sound of her lover's footsteps the damsel was thrilled with joy, even though her face betrayed her inner nervousness. But she felt assured when she got the warmth of his balmy breath. Then the pleasing words of her charmer took away her shyness to some extent.

23. THE MADHYĀ

When with increasing intimacy a young woman is less modest or shy in her behaviour with the Hero, she is called Madhyā.

Seeing Mohana approaching their private apartment the young lady was thrilled with joy. Then with due deference she welcomed her lover with a delicate smile on her lips and with downcast eyes. When Mohana stretched out his arms for an embrace, she said, "No, No", though she did not retrace her steps. Her 'No' here conveys the peculiar meaning 'Yes' by contra-suggestion.

THE PRAGALBHĀ

When the youthful Heroine becomes quite frank with the Hero, she is called Pragalbhā, The example of Saṁyuktā under the first classification illustrates Pragalbhā as well.

OO

पाँच

नायिका : समहिता, ज्येष्ठा, कनिष्ठा तथा स्वाधीनवल्लभा

नायक के नायिका के प्रति आंशिक अथवा अनन्य प्रेम के आधार पर नायिका चार प्रकार की हो सकती है : समहिता, ज्येष्ठा, कनिष्ठा, स्वाधीनवल्लभा।

२४. समहिता

एकाधिक प्रेयसियों के बीच में नायक के समान प्रेम की अधिकारिणी समहिता कहलाती है।

सगी बहिन-सी हम रहती हैं,
रखतीं नहीं द्वेष कुछ मन में;
रखते हैं समभाव सजन भी,
क्रम से आते रहस-भवन में।
प्रिय के साथ-साथ दोनों ही
विचरण करतीं वन-उपवन में;
हास और परिहास बीच दिन--
मास बीतते लगते क्षण में।

२५. ज्येष्ठा

एकाधिक प्रेयसियों के बीच में नायक के अपेक्षाकृत अधिक प्रेम की अधिकारिणी ज्येष्ठा कहलाती है।

रूप और यौवन के मद में
जो इतना-इतना इठलाती,
सुन झूठी चाटूक्ति पिया की
पाँव न धरती पर रख पाती,
वही देख मेरे प्रकोष्ठ में
प्रियतम को फिर-फिर बिलखाती;
दर्प चूर हो जाता उसका,
पर किसका वह क्या कर पाती ?

FIVE

The classification into Samahitā, Jyeshthā, Kanishthā and Svādhīnavallabhā

On the basis of the Hero's partial or total love for her the Heroine can be of four types; Samahitā Jyeṣṭhā, Kaniṣṭhā, Svādhīnavallabhā.

24. THE SAMAHITĀ

When two or more beloveds receive equal favour from the Hero, each one of them is a Samahitā.

We live like real sisters bearing no animosity towards each other. We equally share the love of our Lord, who visits our personal apartments regularly by turn. Both of us wander together with our lover in the woods and the gardens. While cutting jokes and having fun together our days, even months, flee like moments.

25. THE JYEṢṬHĀ

When among two or more beloveds one is a greater favourite with the Hero, she is called Jyeṣṭhā.

Being too much proud of her youth and beauty she gives herself so much of swaggering airs. Hearing the false flattering words of the lover, she would tread on air. The same lady now laments bitterly when she sees the sweet-heart entering my apartment. Her vanity evaporates as she is thus rendered totally helpless.

२६. कनिष्ठा

एकाधिक प्रेयसियों के बीच में नायक के अपेक्षाकृत न्यून प्रेम की भागी नवयौवना कनिष्ठा कहलाती है।

"जाता हूँ गजरे लेने मैं,
वनदेवी–सा तुम्हें सजाना;
शीघ्र लौट आऊँगा, प्रेयसि!
भिन्न भाव मत मन में लाना।"
कर न सकी प्रतिवाद अवश मैं,
शेष रहा केवल पछताना;
भाग्यशालिनी वह सुहागिनी,
जिसे पिया ने अपना माना।

स्वाधीनवल्लभा

नायक के अविभाजित प्रेम की अनन्य अधिकारिणी स्वाधीनवल्लभा कहलाती है। जैसा स्वाभाविक है, स्वाधीनवल्लभा ही गर्विता होती है: प्रेमगर्विता अथवा रूपगर्विता।

२७. प्रेमगर्विता

नायक के अपने प्रति एकनिष्ठ प्रेम को व्यंजक शब्दों द्वारा अभिव्यक्त करनेवाली नायिका प्रेमगर्विता कहलाती है।

कितना होता है मेरा भी
मन बाबुल के घर जाने का!
बार–बार संदेश बीर का
आता मुझको बुलवाने का।
दृश्य देख सकना दुष्कर पर
वदन-कमल के कुम्हलाने का।
कैसे साहस करूँ, सखी री!
प्रिय को पीड़ा पहुँचाने का?

26. THE KANIṢṬHĀ

The young woman, who is able to have a smaller share of the Hero's favour, is called Kaniṣṭhā.

"I am just going to fetch garlands, for therewith I wish to adorn you like a dryad (or a sylvan goddess). I shall be back in a trice, my darling ! Pray, don't think otherwise". On hearing these delusive words of my lover I felt completely helpless, and could not even protest. What remains now for me is just a feeling of remorse. Blessed is that other lady, who has been able to monopolize the love of the sweetheart.

THE SVĀDHĪNAVALLABHĀ

The Svādhīnavallabhā has the sole monopoly of the love of the Hero. Quite naturally she can be called Garvitā as well, either Premagarvitā or Rūpagarvitā.

27. THE PREMAGARVITĀ

The Premagarvitā suggestively conveys the Hero's exclusive love for her.

How much do I yearn to visit my father's home ! My brother has been sending me repeated invitations. But the prospect of my leaving him makes his face wither like a lotus flower, and presents a piteous sight for me to watch. O friend ! tell me, how can I dare torment my beloved ?

२८. रूपगर्विता

अपने सौन्दर्य को ही प्रिय की अनन्य आसक्ति का कारण मानते हुए अपने रूप-गर्व को व्यंजक शब्दों द्वारा अभिव्यक्त करनेवाली नायिका रूपगर्विता कहलाती है।

"तुमको देख, प्रिये ! पूनम का
चाँद बादलों में छिप जाता;
केशराशि लख मेघ गगन में
रो-रोकर आँसू बरसाता;
छूकर गात सुगंध, सुकोमल
त्रिविध समीरण भी शरमाता।"
ऐसे चाटु वचन सुन, री सखि !
मन मेरा कितना भरमाता !

○○○

28. THE RŪPAGARVITĀ

Believing that her beauty accounts for her lover's infatuation for her, the Rūpagarvitā, being too conscious of her charm, expresses her pride through suggestive words.

"O darling! the full moon pales on seeing your radiant face and hides behind the clouds out of shame. The clouds, when they see your fair tresses, shed profuse tears out of envious agony. The cool, gentle and balmy breeze feels ashamed, when it touches your fragrant and tender body". Dear friend! how much deluded do I feel when I hear such honeyed words of my sweetheart!

O O O

उपसंहार

परगमन के दोषी नायक के प्रति व्यवहार के आधार पर नायिका का एक बहुप्रचलित वर्गीकरण और भी है, जिसके अन्तर्गत उसके तीन भेद किए गए हैं : उत्तमा, मध्यमा एवं अधमा। भानुदत्त के अनुसार उत्तमा दोषी नायक के प्रति भी आक्रोश अथवा मान का प्रदर्शन नहीं करती। यदि हम इस वर्गीकरण को स्वीकार कर लें तो राधा तक को, जिसे अनपवाद रूप से प्रेम और भक्ति का सर्वोत्तम प्रतीक माना गया है, कम-से-कम खंडिता, मानवती और कलहांतरिता की स्थितियों में मध्यमा, अथवा अधमा ही कहना पड़ेगा, उत्तमा कदापि नहीं। जबकि तथ्य यह है कि लगभग सभी महान् भक्त-कवियों ने, जिनमें जयदेव, विद्यापति और सूरदास प्रमुख हैं, राधा का उपर्युक्त स्थितियों में भी चित्रण किया है।

EPILOGUE

There is yet another popular classification of the Heroine, on the basis of her behaviour with the errant Hero, into Uttamā, Madhyamā and Adhamā. The Uttamā, according to Bhānudatta, does not show any anger or Māna to the errant Hero. In case we accept this classification, even Rādhā, who has been universally acclaimed as a symbol of the highest form of love and devotion, will have to be termed either Madhyamā or Adhamā, and never Uttamā, particulerly when she is placed in the situations of Khaṇḍitā, Mānavatı and Kalahāntaritā. But the fact remains that Rādhā has been portrayed in these situations as well by almost all the great devotee-poets, prominent among them being Jayadevā, Vidyāpati and Sūradāsa.

OOO